प्राक्कथन

शोधविषय : नागार्जुन के खंडकाव्यों में चित्रित नारीजीवन

विषयचयन एवं प्रेरणा :-

हिंदी भाषा के प्रति मेरा बचपन से ही लगाव था। स्नातक तथा स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान काफी लोकप्रिय आधुनिक कवियों की कविताओं का अध्ययन किया था। इसी बीच नागार्जुन जी की कविताएँ पढ़ने का मौका मिला। उनका संपूर्ण साहित्य आम लोगों के जीवन से जुड़ा हुआ है। उनका काव्य भोगा हुआ यधार्थ होने के कारण उसमें अनुभूति की ईमानदारी है। जनसामान्य के प्रति आस्था ने मुझे उनके काव्य की ओर आकृष्ट किया। इसी दौरान उनके 'भस्मांकुर' और 'भूमिजा' खंडकाव्य पढ़े। इनमें नागार्जुन ने नारी जाति के प्रति अन्याय तथा उपेक्षित जीवन का अंकन किया है। इन खंडकाव्यों के प्रति मेरे मन में रुचि उत्पन्न हुई। एम.फिल. विषयचयन के दौरान नागार्जुन के खंडकाव्यों पर विचार किया और अपनी रुचि मैंने अपने आदरणीय गुरुवर्य डॉ. राजेंद्र शहा जी के सामने प्रकट की। उन्होंने मुझे प्रेरणा दी तथा 'नागार्जुन के खंडकाव्यों में चित्रित नारीजीवन' इस विषय पर अध्ययन करने के लिए अनुमति दी। डॉ. राजेंद्र शहा सर जी का मार्गदर्शन मिलना मेरे लिए सौभाग्यपूर्ण बात रही। इसी लिए मैंने इस विषय पर शोधकार्य करने का निर्णय लिया।

शोधविषय का महत्व एवं उद्देश्य :-

हिंदी साहित्य के प्रतिभासंपन्न प्रगतिवादी साहित्यकारों में नागार्जुन का नाम उच्चकोटि का माना जाता है। उनका साहित्य जनजीवन से संबंधित रहा है। सर्वहारा वर्ग के दुखों को वाणी देने का प्रयत्न उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किया है। हिंदी साहित्यजगत् में उपन्याससम्राट प्रेमचंद के पश्चात सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले कोई साहित्यकार हों तो वे नागार्जुन थे। उन्होंने अपने साहित्य में शोषक वर्ग के प्रति तीव्र असंतोष प्रकट किया है और शोषितों के प्रति अत्यंत सहानुभूति प्रकट की है। सिर्फ सहानुभूति ही प्रकट नहीं की, तो उनमें अन्याय के प्रति विद्रोह की आग पैदा की। वे नारी स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनके विचार से नारी भी शोषित ही है, अतः उन्होंने अपने खंडकाव्यों में नारी शोषण को व्यक्त कर व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट किया है।

स्वाधीनोत्तर भारतीय समाज में व्याप्त जमींदारी प्रथा, पूँजीवाद, आर्थिक विषमता, विभिन्न रूढ़ि एवं परंपराओं को देखकर कवि के मन में पैदा हुए आक्रोश ने विद्रोह को जन्म दिया। इसी विद्रोह का रूपांतर उनकी यथार्थवादी काव्य रचनाओं में हुआ। उन्होंने अपने काव्य में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विषमताओं पर करारा व्यंग्य किया है। कवि ने सभी क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों, विषमताओं का पर्दाफाश करके समाज में जागृति लाने का प्रयत्न किया है।

... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

उनके काव्य में युगीन परिवेश की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। अतः 'नागार्जुन के खंडकाव्यों में चित्रित नारीजीवन' इस लघु शोध-प्रबंध द्‌वारा वर्तमान नारी जीवन के शोषण एवं विशेषताओं का, उपेक्षित जीवन का काव्य के माध्यम से विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत करना उद्‌देश्य रहा है।

संपन्न अनुसंधान कार्य :-

मेरी जानकारी के अनुसार अब तक नागार्जुन के काव्य पर निम्न शोध-प्रबंध लिखे गए हैं।

1. नागार्जुन के 'भूमिजा' का मूल्यांकन।
2. खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में 'भस्मांकुर' का अनुशीलन।
3. नागार्जुन और नारायण सुर्वे के काव्य में प्रगतिशील चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।(पीएच.डी.)
4. नागार्जुन और आनंद यादव के कथासाहित्य में चित्रित ग्राम जीवन का तुलनात्मक अध्ययन।

अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हुए थे :-

1. नागार्जुन का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा रहा?
2. नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं जीवन का उनके काव्य पर क्या प्रभाव पड़ा है?
3. उनके काव्य में समकालीन परिवेशजन्य अनुभूतियों का किस प्रकार योगदान रहा?
4. उनके काव्य का स्वर विद्रोही क्यों रहा है?
5. उन्होंने पौराणिक त्रिषय को लेकर खंडकाव्य क्यों लिखे?

शोध प्रबंध (लघु शोध-प्रबंध) की व्याप्ति :-

शोधविषय की अपनी सोमा निर्धारित होती है और होनी ही चाहिए, क्योंकि शोधकार्य कभी खत्म न होने वाला कार्य है। सुचरु रूप से शोधकार्य संपन्न होने के लिए शोधकार्य की रूपरेखा संतुलित और सुचारु रूप से बनानः अनिवार्य है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय :- "नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रस्तुत अध्याय में मैंने नागार्जुन के जीवनपरिचय को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। इसमें जन्म तथा बचपन, माता-पिता का परिचय, शिक्षा, विवाह तथा गृहस्थ जीवन, घुमक्कड़ प्रवृत्ति, समाजसेवा तथा साहित्यसेवा और मृत्यु के बारे में जानकारी दी है। व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्तित्व के बाह्यपक्ष एवं आंतरिक पक्ष का विवेचन प्रस्तुत किया है। कृतित्व के अंतर्गत उनके कृतित्व की संक्षिप्त जानकारी एवं काव्यकृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया है। इसके साथ ही उनके जीवन में प्राप्त सम्मानों का भी उल्लेख किया है। अध्याय के अंत में कुल निष्कर्ष दिया है।

द्‌वितीय अध्याय :- "खंडकाव्य का स्वरूप एवं नागार्जुन के खंडकाव्य"

प्रस्तुत अध्याय में मैंने खंडकाव्य के स्वरूप पर प्रकाश डाला है। खंडकाव्य का स्वरूप, लक्षण परिभाषा, तत्व, छंद, अलंकार आदि का विवेचन किया है तथा आगे चलकर नागार्जुन के खंडकाव्यों

का स्वरूप बतलाकर खंडकाव्यों के तत्वों के आधार पर नागार्जुन के खंडकाव्यों का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय :- "नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारी चित्रण"

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने नागार्जुन के खंडकाव्य 'भस्मांकुर' और 'भूमिजा' में चित्रित नारीजीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। भारतीय समाज तथा हिंदी साहित्य में नारो के स्थान पर संक्षिप्त दृष्टिक्षेप किया है। नागार्जुन के खंडकाव्यों में माता, पत्नी आदि नारी के रूपों पर प्रकाश डाला है। साथ ही नारी के चरित्रगत विशेषताओं का विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

चतुर्थ अध्याय :- "नागार्जुन के खंडकाव्यों में नारीसमस्या"

प्रस्तुत अध्याय में मैंने नागार्जुन के खंडकाव्यों में चित्रित विविध नारी समस्याओं - जैसे, व्यक्तिगत समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ आदि का वर्णन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय :- "नागार्जुन के खंडकाव्यों में आधुनिकता बोध"

प्रस्तुत अध्याय में आधुनिकता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए मैंने नागार्जुन ने पौराणिक खंडकाव्यों के माध्यम से वर्तमान जीवन में व्याप्त व्यवस्थाजन्य विषमता, शोषण एवं अन्याय की समस्या पर दृष्टिपात किया है। साथ ही दोषपूर्ण न्यायव्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है। पौराणिक मूल्यों का आधुनिकीकरण करना मूल लक्ष्य रहा है। साथ ही पौराणिक नारी समस्याओं को दिखाकर वर्तमान नारीसमस्या की ओर कवि का संकेत रहा है। कवि युग का नवनिर्माण करना चाहते हैं। समग्र विवेचन के पश्चात अंत में निष्कर्ष दिया है।

उपसंहार :-

अंत में मैंने शोधप्रबंध के अध्यायों के निकाले हुए निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए हैं।

* * *

ऋणनिर्देश

सर्वप्रथम में श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. राजेंद्र शहा जी की ऋणी हूँ, क्योंकि अपने कार्य में अत्यंत व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने समय-समय पर बिना अपनी असुविधा का प्रश्न उठाए मेरा मार्गदर्शन किया। मैं जब भी आपके घर गई, सौ. शहा जी ने सहयोगपूर्ण स्नेह दिया। अतः मैं आपकी भी ऋणी हूँ। शहा सर जी के स्थान पर और कोई मेरे निर्देशक होते तो शायद मेरा शोधकार्य अधूरा ही रह जाता। शहा सर जी के प्रोत्साहन, प्रेरणा, स्नेह एवं आशीष के कारण ही यह कार्य संपन्न हुआ। अतः मैं जन्मभर उनकी ऋणी रहूँगी।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अध्ययन के दौरान मेरे बार-बार परेशान करने पर भी मेरी गलतियों को माफ कर मेरे अध्ययन को योग्य दिशा दी। अतः मैं पुनः उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

मुधोजी महाविद्यालय के मेरे आदरणीय गुरुजनों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिनमें रणवरे सर जी, घाडगे मॅडम, धवडे सर जी एवं श्रीवास्तव सर जी हैं, जिन्होंने स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययन कराया। विशेष आभार मेजर धनवट सर जी का मानूँगी, जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रेरणा दी।

मुधोजी महाविद्यालय के ग्रंथपाल जाधव सर, पवार सर तथा अन्य ग्रंथालयीन कर्मचारियों का मैं आभार मानती हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर किताबें उपलब्ध करा दी। साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथालयीन कर्मचारियों की भी मैं आभारी हूँ।

उन रचनाकारों, आलोचकों तथा विद्वानों की भी सविनय आभारी हूँ जिनकी रचनाओं, शोधग्रंथों एवं लेखों से मैंने किसी न किसी रूप से सामग्री ग्रहण की है।

मेरी माँ और भाई का आशीर्वाद मेरे अध्ययन के लिए विशेष उपयोगी साबित हुए हैं।

मेरे प्रिय पति की अनुमति एवं प्रोत्साहन न मिलता तो शादी के बाद ग्यारहवीं कक्षा से लेकर एम.फिल. तक का अध्ययन करना संभव ही नहीं होता। मेरे चिरंजीव 'कुमार' और कन्या 'प्रीति' ने अध्ययन के दौरान मुझे गृहकार्य में अत्यंत सहायता की। साथ ही गुड्डी, अजित और आशा जी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करूँगी, जिन्होंने मुझे समय-समय पर सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त उन सभी हितचिंतकों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग दिया है।

इस लघु शोध प्रबंध का सुचारु रूप से और अल्पावधि में टंकन करने वाली सौ. प्रीति पराग शाह, पुणे के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

* * *